१३. अपरा एकादशी

ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष में आनेवाली अपरा एकादशी का वर्णन ब्रह्मांड पुराणमें महाराज युधिष्ठिर और भगवान् श्रीकृष्ण के संवाद मे आता है ।

युधिष्ठिर महाराज ने भगवान् श्रीकृष्ण को पूछा, ''हे कृष्ण ! हे जनार्दन! ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष में आनेवाली एकादशी का नाम क्या है ? उसके महात्म्य के बारे में कृपया आप वर्णन करें।''

भगवान् श्रीकृष्ण युधिष्ठिर महाराजको कहने लगे, ''हे महाराज युधिष्ठिर! अपने सचमुच बहुत ही समझदारी का और वास्तविकतासे देखा जाए तो सबके लिए हितकारक प्रश्न पूछा है । इस एकादशी का नाम अपरा है। जो भी इस व्रत पालन करता है वह समस्त पापोंसे मुक्त होकर अमर्यादित पुण्य संचय करता है । इस व्रत के पालन से अनेक घोर पापोंसे, जैसे कि ब्रह्महत्या, भ्रुणहत्या, दूसरोंकी निंदा करना, अनैतिक स्त्री-पुरुष संग, झूठ बोलना, झूठी गवाही देना, अभिमान करना, पैसे के लिए अध्यापन तथा वेद पठण, अपनी मर्जीसे ग्रंथ लिखना, साथ ही झूठे भविष्य कहनेवाले, फँसाने वाले वैद्य मुक्त होते है। लडाई से डरकर भागकर आए हुए क्षत्रिय को नरकद्वार मिलता है, क्योंकि उन्होंने अपने धर्म का पालन न करके अपने पतन के लिए जिम्मेदार वह होते है। परंतु इस व्रत के पालन से ऐसे क्षत्रिय को भी स्वर्गप्राप्ति होती है।

भगवान् श्रीकृष्ण ने आगे कहा, ''हे राजन् ! अपने गुरुसे ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात उनकी निंदा करनेवाले शिष्यको पाप की राशियाँ मिलती है। उस निंदित व्यक्तिने भी इस व्रतका पालन किया तो वह भी सभी पापोंसे मुक्त हो जाता है। हे राजाधिराज! कार्तिक मास में पुष्कर तीर्थमें स्नान करनेसे प्राप्त किया हुआ पुण्य, माघ मास में प्रयाग तीर्थमें स्नान करनेसे, काशीमें जाकर महाशिवरात्री पालन करनेसे, गयामें जाकर विष्णुपादपर पिंडदान करनेसे, गुरु जबभी सिंह राशी में आता है, उस समय गौतमी में स्नान करनेसे, कुंभ मेले के समय केदारनाथ जानेसे, बद्रिनाथ यात्रा करनेसे, सूर्यग्रहण के समय कुरुक्षेत्री ब्रह्मसरोवर में स्नान करनेसे तथा हाथी, अश्व, सुवर्ण और भूमिदान से प्राप्त किया हुआ फल केवल अपरा एकादशी के पालन से सहज प्राप्त होता है। यह व्रत बहुत ही तीक्ष्ण कुल्हाडी से पापवृक्ष को तोड देता है अथवा आगके जैसे सारे पापवृक्षोंको जलाकर भस्म करता है। यह व्रत तेजस्वी सूर्य से पापों के अंधःकार को दूर भगाता है, हिरनरूपी पापोंको भगानेवाला यह सिंहव्रत है। इस अपरा एकादशीका पालन करनेसे और भगवान्‌के त्रिविक्रम रूप की पूजा करनेसे वैकुंठ की प्राप्ति होती है। दूसरोंके हित के लिए जो कोई भी यह महात्म्य पढेगा अथवा जो सुनेगा वह सभी पापोंसे मुक्त हो जाता है।

७२ ७२ ७२

१४. निर्जल एकादशी

निर्जल एकादशी का वर्णन ब्रह्मवैर्वत पुराणमें श्रील व्यासदेव और भीमसेन के संवादमें मिलता है।

एक बार पांडूपुत्र भीमसेनने अपने पितामह श्रील व्यासदेव को पूछा, ''हे पितामह ! माता कुंती, द्रौपदी, तात युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल और सहदेव सभी एकादशी का व्रत करते है। भ्राता युधिष्ठिर भी मुझे यह व्रत करनेको कहते है और मुझे भी यह ज्ञात है कि एकादशी को उपवास करना यह वेदोंका आदेश है, पर मुझे भूख सहन नही होती। मैं सभी नियमानुसार केशवकी उपासना, पूजा करना, मेरे क्षमता अनुसार दानधर्म करना ये सभी करुँगा पर उपवास नहीं कर सकता। कृपा करके उपवास के बिना एकादशी व्रत कैसे करना चाहिए इस विषय में आप बताएँ।''

यह सब सुनकर भीमसेन को श्री वेदव्यासजी ने कहा, ''हे भीम ! अगर नरक के स्थानपर स्वर्ग जाता है तो मास के दोनों एकादशी का पालन तुम्हें करना चाहिए। अर्थात दोंनो एकादशीको अन्न ग्रहण नहीं करना चाहिए।

भीमसेन ने कहा, ''वर्ष में आनेवाली २४ एकादशी को उपवास करना मेरे लिए असंभव है। रातदिन की बात क्या मै तो क्षणभर भी भूखा नही रह सकता। 'भुख' नामका उदराग्नी मेरे उदर में नित्य प्रज्वलित रहती है। उसे शांत करने के लिए मुझे बहुत खाना पडता है। बहुत हुआ तो वर्ष में एक दिन मैं उपवास कर सकता हूँ । इसलिए आप मुझे योग्य ऐसे एक व्रत के बारें में बताइये जिससे मेरा जीवन मंगलमय बन जाएँ ।''

श्रील व्यासदेवजी ने कहा, ''हे राजन् ! अभी मैंने तुम्हें सभी वैदिक विधियाँ बताई है । परंतु कलियुगमें कोईभी उसका पालन नही करेगा। इसिलिए बहुत ही उंचा और सर्वहितकारक श्रेष्ठ व्रत मैं तुम्हे बताता हूँ । ये व्रत सभी शास्त्रोंका, पुराणोंका सार है जो कोई भी शुक्ल और कृष्ण पक्षमें आनेवाली एकादशीका पालन करता है उसे नरक नही जाना पडता ।''

व्यासदेवजी के कथन पर बलशाली भीमसेन भयसे काँपते हुए पूछा, ''हे पितामह! अब मैं क्या करुँ ? मास के दो दिन का उपवास करने में पूर्ण असमर्थ हूँ । कृपया आप मुझे ऐसा व्रत कहें जिसके पालन से मुझे सभी व्रतोंका फल प्राप्त हो।''

उसके पश्चात श्रीवेदव्यासजी ने कहा, ''ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्षमें जब सूर्य वृष अथवा मिथुन राशीमें आता है, उस समय के एकादशी को निर्जल कहते है। इस दिन जल भी ग्रहण नही करना चाहिए। इस दिन आचमन करते हुए एक राई डुबे इतनाही जल लेकर आचमन करना चाहिए। इससे ज्यादा जल पीनेसे मद्यपान करनेका परिणाम प्राप्त होता है। इस एकादशी में कुछ भी खाना वर्जित है, खानेसे व्रत भंग हो जाता है। एकादशी

के सूर्योदय से द्वादशी के सूर्योदय तक पानी भी वर्जित है। इस प्रकार व्रत का पालन करने से वर्षकी सभी एकादशीका फल इस एक व्रत से होता है। द्वादशी की सुबह ब्राह्मणोंको जल और सुवर्ण दान करके व्रत करनेवाले को आनंद से ब्राह्मण के साथ ही भोजन ग्रहण करना चाहिए।''

''हे भीमसेन ! इस एकादशी व्रत से प्राप्त होनेवाले पुण्य के बारे में सुनिए। केवल इस एकादशी के पालन से ही वर्ष की सभी एकादशी व्रत पालन करने का पुण्य प्राप्त होता है। शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण करनेवाले भगवान् विष्णुने मुझे बताया था, जो कोई भी अन्य धर्मोंका त्याग करके मेरी शरण आता है और निर्जल एकादशी का पालन करता है वह मुझे बहुत प्रिय है और वह निश्चय ही सभी पापोंसे मुक्ति पाता है। स्मार्त विधि नियमोंका पालन करनेसे कोई भी कलियुगमें उच्च ध्येय नही प्राप्त कर सकता क्योंकि कलियुगके अनेक दोषोंसे वे सभी विधिनियम भी प्रदूषित होंगे।''

''हे वायुपुत्र ! किसी भी एकादशी में अन्न खाना त्याज्य है साथ ही निर्जल एकादशीमें पानी पीना भी वर्जित है। इस व्रत के पालन से सभी तीर्थस्नान के यात्रा का फल मिलता है और मृत्यु के समय भयानक यमदूतों के स्थानपर सुंदर विष्णुदूत उस व्यक्ति को वैकुंठ ले जायेंगे। इस एकादशी का पालन करके जो कोई भी गोदान करता है वह अपने सभी पापकर्मोंसे मुक्त होता है।''

जब अन्य पांडुपुत्रोने इस एकादशी के बारे में सुना तो इस व्रत का पालन करनेका निश्चय किया। उसी समयसे भीमसेन ने भी इस व्रतका पालन करना आरंभ किया। इसीलिए इस एकादशीको भीमसेनी एकादशी अथवा पांडव एकादशी भी कहते है। भगवान् श्रीकृष्णने घोषणा की है, ''जो कोई भी इस एकादशी दिन पुण्यकर्म करता है, तीर्थस्थान में स्नान करता है, वैदिक मंत्रों का पठन करता है और यज्ञ करता है वह सब अक्षय हो जाता है।''

इस व्रत की महिमा जो कोई भी श्रवण करेगा उसे अमावस के साथ आनेवाली प्रतिपदा के दिन पितरों को दिया हुआ तर्पण का फल प्राप्त होता है। साथ ही उस व्यक्ति को वैकुंठ प्राप्त होता है।

ဗ ဗ ဗ

१५. योगिनी एकादशी

आषाढ मास के कृष्ण पक्षमें आनेवाली योगिनी एकादशी का महात्म्य ब्रह्मवैवर्त पुराणमें भगवान् श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर महाराज के संवाद में वर्णित है ।

एक बार युधिष्ठिर महाराजने भगवान् श्रीकृष्ण को पूछा, ''हे भगवान ! आषाढ मास के कृष्ण पक्ष में आनेवाली एकादशी का संबोधन क्या है ?''

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, ''हे राजन् ! इसको योगिनी एकादशी कहते है। इसके पालनसे व्यक्ति गंभीर पापकर्म और भवसागर से मुक्ति पाता है ।''

''हे नृपश्रेष्ठ ! अब मैं एक सुंदर कथा कहता हूँ । अलकापुरी के राजा महाराज कुबेर शिवजीके अनन्य भक्त थे । हेम नामका यक्ष उनका माली था। उसकी पत्नी विशालाक्षी बहुत सुंदर थी और यक्ष हेम विशालाक्षी पर बहुत आसक्त था। मानस सरोवर से सुंदर फूल इकट्ठा करके वह फुल हेम कुबेर को देता था। कुबेर उन सुंदर फूलोंका उपयोग शिवजी के उपासना हेतु करते थे। एक दिन हेमने सुंदर फूल इकट्ठा किये, पर वह कुबेर को न देकर ही पत्नी के प्रेम के कारण घर में रखके उसके साथ ही रहा।''

फूलोंके अभाव के कारण की पूजा संपन्न न हो सकी। छह घंटे प्रतीक्षा के पश्चात कुबेर को अत्यंत क्रोध आया और उन्होंने अपने एक सैनिक को माली के पास भेजा। हेम माली के पास से लौटते ही कुबेर को उस सैनिकने कहा, हेम माली घर में अपने पत्नी का संग कर रहा है ? ये सुनने के पश्चात कुबेरने हेम मालीको अपने पास लाने का आदेश दिया। अपनी भूलको जानकर हेमने कुबेरके सामने आते ही साष्टांग प्रणाम करके हाथ जोडकर खडा रहा। क्रोधित कुबेरने उसे कहा, ''हे मूर्ख। आध्यात्मिक (धार्मिक) तत्त्वोंका खंडन करनेवाले महापापी व्यक्ति ! अपनी पत्नी के आसक्ति के कारण आज तुमने मेरे प्रिय आराध्य महादेवजी का अपराध किया है। ये केवल तुम्हारे इंद्रियभोग के कारण हुआ । इसलिए तुम्हे कोढ हो यह मै शाप देता हूँ, जिससे इसके आगे तुम

अपनी पत्नी से हमेशा दूर रहोगे। मूर्ख ! फौरन इस जगह से निकल जाओ।''

कुबेर के इस श्रापसे हेम मालीका अलकापुरीसे पतन होकर इस मृत्यु लोकमें जन्म हुआ। थोडे काल बाद उसे कोढ हुआ। उस दुखसे वह परेशान था। भूख, प्यास और परेशानी से व्याकुल होकर वह वन में गया और बहुत रात-दिन उसने इसी तरह गुजारे। दिनभर उसे सुख नही मिलता तो रात को उसे निद्रा नही आती। इसी तरह उसने अनेक सर्दी-गर्मी के वर्ष निकाले। पिछले जन्ममें शिवजीकी उपासना में सहायता करने के कारण उसे अपने पिछले जन्म का स्मरण था और अनेक पापकार्यों में मग्न होते हुए भी उसकी चेतना शुद्ध और सावधान थी ।

भ्रमण करते - करते एक दिन वह मेरु पर्वत पर पहुँचा । वहाँपर उसने महान तपस्वी मार्कण्डेयजी को देखा, जिनकी आयु ७ कल्प (ब्रह्माके दिन) है। उन्हे देखकर दूर से ही उसने अनेक बार साष्टांग प्रणाम किया। तो दयावान, करुणावान मार्कण्डेय ऋषिने उसे अपने समीप बुलाकार पुछा, ''तुमने ऐसा कौनसा महापाप किया है जिससे तुम्हे यह रोग हुआ है ?''

ये सुनने के पश्चात हेम मालीने सभी वृत्तांत उन्हे कहा और पूछने लगा, ''हे ऋषिवर ! गत जन्मों के कुछ पुण्य के उदय से आपके दर्शन मुझे हुए है। कृपा करके पापमुक्त होने के लिए कोई उपाय बताएँ ।''

तभी मार्कण्डेय ऋषिने कहा, ''हे माली ! आषाढ मास की कृष्ण पक्ष में जो योगिनी एकादशी आती है, उस व्रत का पालन तुम करो ! ऐसा करनेसे उस व्रत के प्रभाव से तुम सभी पापोंसे मुक्त हो जाओगे।'' यह सुनकर हेम मालीने उस व्रतका कठोरता से पालन किया और कोढमुक्त होकर अलकापुरीको लौट गया और अपनी पत्नी के साथ आनंद में रहने लगा।

८८ हजार ब्राह्मणोंको भोजनदान कराने का फल केवल इस एकादशी के व्रत के पालन से मिलता है । सभी पापोंसे मुक्त होकर व्यक्ति पुण्यवान बन जाता है ।

ca ca ca

१६. शयन एकादशी

भविष्योत्तर पुराणमें शयन अर्थात पद्मा अर्थात देवशयनी एकादशी का महात्म्य श्रीकृष्ण और महाराज युधिष्ठिर के संवादोंमें विस्तृत रूपसे कहा गया है ।

एक बार युधिष्ठिर महाराजने श्रीकृष्ण को पूछा, ''हे केशव ! आषाढ मास के शुक्ल पक्ष में आनेवाली एकादशी का नाम क्या है ? इस दिन के देवता कौन है ? इस व्रत के पालन की विधि क्या है ? इस बारे में विस्तार से आप कहिये ।''

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, ''हे भूपाल ! एक बार वाक्कुशल देवर्षि नारदने ब्रह्मदेवको यही प्रश्न पूछा। उसपर ब्रह्मदेवने उत्तर दिया, ''इस संसार में एकादशी के व्रतसमान पुण्य प्रदान करनेवाला कोई भी व्रत नही। सभी पापोंसे मुक्त होने के लिए हरएक को इस व्रतका पालन करना चाहिए। जो इस व्रतका पालन करता है वह कभी भी नरक प्राप्त नही करता। आषाढ मास के शुक्ल पक्ष में आनेवाली एकादशी को शयन अथवा देवशयनी या पद्मा एकादशी कहते है। इस दिनके अधिष्ठाता भगवान् हृषिकेश है। इसलिए उनके प्रसन्नता के लिए इस व्रतका पालन करना चाहिए।''

ऐसा कहा जाता है कि पूर्व समय में रघुवंश में जन्में मांधता नामक राजा पृथ्वीपति थे। सत्यवादी राजाओंके वह अग्रणी थे । साथ ही बहुत बलवान, पराक्रमी थे और प्रजा का पालन अपनी संतान की तरह करते थे। इस पुण्यवान राजा के राज्य में कभी बाढ, सूखा नही था साथ में कोई भी बीमारी नही थी। इससे सभी प्रजा प्रसन्नचित्त और सुखपूर्वक रहती थी। राजाके कोषमें अन्याय से लिया हुआ थोडा भी धन नही था। इस प्रकार से राजा और प्रजा दोनोंही आनंद से दिन गुजार रहे थे।

कुछ वर्षो पश्चात दैव से अथवा किसी पाप कर्मसे, तीन वर्षोतक लगातार वर्षा नही हुई। धान के अभाव में लोग भूखे मरने लगे, यज्ञ करना बंद हो

गया। सभी दुःखसे व्याकुल होकर राजासे बीनती करने लगे, ''हे राजन ! कृपया हमारी सुने ! वेदोंमें जलको 'नर' कहते है और 'अयन' मतलब अधिष्ठान, वास्तव्य । इसीसे भगवान् का एक नाम नारायण है। जो हमेशा जलमें वास्तव्य करता है वह वर्षा का मूल कारण है । वर्षासे अनाज होता है, अन्न से सबका पोषण होता है । इसीलिए, हे राजन् ! आप कुछ उपाय करे जिससे सब जगह पुनःशांती और सुख की स्थापना हो।''

राजाने कहा, ''आपने जो कहा वह सत्य है। अन्न पूर्ण ब्रह्म है। सभी अन्न पर आश्रित है। वेदों और पुराणोंमें कहा गया है कि, राजा ने किए हुए पाप के कारण यह परिस्थिती निर्माण होती है। पर मुझे ज्ञात नही हो रहा है कि मुझसे ऐसा कौनसा पाप हुआ है, उससे यह परिस्थिती निर्माण हुई है। फिर भी अपने प्रजा के हित के लिए मै प्रयास करुँगा।''

ऐसा कहकर अपने मुख्य अधिकारी और सैनिकोंके साथ ब्राह्मणोंकों को प्रणाम करके राजाने वनमें प्रवेश किया। वनमें भ्रमण करते हुए उन्होंने अनेक आश्रमोंको भेट दी और एक दिन सौभाग्यसे उन्हे अंगीरामुनि मिले। अंगीरामुनि ब्रह्माजीके पुत्र थे और बहुत तेजस्वी थे। जितेंद्रीय राजा मंदतने उन्हे देखकर प्रणाम किया और हाथ जोडकर उनसे प्रार्थना की और मुनिने भी राजाको आशीर्वाद दिया।

उसके पश्चात ऋषिनें राजा के आगमन हेतु की विचारणा की, प्रजा के बारे में पूछा। राजाने कहा, ''हे भगवन् ! मै धर्मनिष्ठा से राज करता हूँ, फिर भी मेरे राज्य में वर्षा नही हुई। इससे मेरी प्रजा बहुत दुःखी है। इसका कारण क्या है यह मुझे समझ में नही आ रहा है। कृपया मेरे प्रजा में सुखसमृद्धी किस प्रकार आयेगी इस विषय में आप मुझे कहिए।''

अंगिरामुनि कहने लगे, ''हे राजन ! वर्तमान युग सत्ययुग है । सभी युगोंमे ये सर्वश्रेष्ठ है परंतु इस युगमें केवल ब्राह्मणोंको तपस्या करनेका अधिकार है। परंतु तुम्हारे राज्यमें एक शुद्र तपस्या कर रहा है उसीकी तपस्या से तुम्हारे राज्यपर यह परिस्थिती आई है। इसलिए तुम्हे उस शुद्रको मारकर प्रजा में सुखसमृद्धि लानी चाहिए।''

राजाने कहा, ''हे ऋषिवर ! तपस्या में मग्न निष्पाप व्यक्ति को मारना असंभव है। कृपया आप मुझे अन्य सुलभ उपाय बताएँ ।''

अंगीरामुनि ने उत्तर दिया, ''इस परिस्थिती में पवित्र पद्मा या देवशयनी अर्थात शयन् एकादशी का पालन आपको तथा आपकी प्रजाको करना चाहिए। इसके पालन से राज्य में वर्षा होगी। यह एकादशी आषाढ मास के शुक्ल पक्ष में आती है । इस व्रत के पालन से व्यक्ती सभी पापोंसे मुक्त होता है और उसके अंतिम ध्येयप्राप्ती के मार्ग की रुकावटे दूर हो जाती है। हे राजन् ! तुम्हें अपने परिवार और प्रजा के साथ इस व्रत का पालन करना चाहिए ।''

अंगीरामुनि के वचन सुनकर राजा अपने राज्य लौट आये । सभी ने आषाढ मास की एकादशी के व्रत का पालन किया। इस व्रत के प्रभाव से राज्य में सब जगह वर्षा हुई। राज्य में सुखसमृद्धी से सारी प्रजा प्रसन्न हो गई। इस व्रत के पालन से भगवान् हृषिकेश प्रसन्न होते है और व्रत करनेवाले के कथन अथवा श्रवण करनेसे सभी पाप नष्ट हो जाते है।

इस एकादशी को विष्णु शयनी एकादशी भी कहते है। भगवान् विष्णु की प्रसन्नता के लिए वैष्णव इस व्रत का पालन करते है। अन्य भौतिक भोंगो के लिए नही, अपितु उनकी शुद्ध भक्ति की प्राप्ति के लिए वैष्णव प्रार्थना करते है। इस एकादशी से ही चार्तुमास व्रत प्रारंभ होता है । इसी दिन से भगवान् शयन करते है । इस काल से उनके उठने तक चार महीने उनके गुणों का श्रवण, कीर्तन करके वैष्णव इस व्रत का पालन करते है ।

युधिष्ठिर महाराजने फौरन श्रीकृष्ण को पूछा, ''भगवान ! किस प्रकार इस विष्णुशयन व्रतका अर्थात् चातुर्मास का पालन करना चाहिए । कृपया इस बारे में आप कहिए।''

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, ''हे राजन् ! जब सूर्य कर्कराशि में प्रवेश करता है उस समय अखिल ब्रह्मांड के पालक भगवान मधुसूदन शयन करते है। जिस समय सूर्य तुला राशिमें प्रवेश करता है उस समय भगवान निद्रा से जाग जाते है। शयन एकादशी से चातुर्मास प्रारंभ होता है। हे युधिष्ठिर महाराज! प्रातः उठकर स्नान के पश्चात भगवान विष्णु को पीतांबर पहनाना चाहिए।''

भगवान के लिए सफेद चादर का बिछाना लगाना चाहिए। भगवान् को पंचामृत का अभिषेक करके उन्हे पोछकर चंदन का लेप लगाना चाहिए। धूप, दीप, फूल अर्पण करके उनकी पूजा करनी चाहिए और उन्हे सुलाना चाहिए।

चातुर्मास का प्रारंभ हम एकादशी, द्वादशी, पूर्णमासी, अष्टमी या संक्राती (सूर्य कर्क राशीमें प्रवेश करता है उस दिन से) से कर सकते है। कार्तिक मास की द्वादशी को चातुर्मास व्रत का समाप्त होता है। जो व्यक्ति चातुर्मास व्रत धारण करता है वह भगवान् का स्मरण करते हुए सूर्य के समान तेजस्वी विमान में बैठकर भगवान् के धाम जाता है। जो व्यक्ति चातुर्मास में भगवान् के मंदिर की, आगे के आंगन का मार्जन करता है, पेड और लताओंसे सुशोभित करता है उसे सात जन्म आनंद की प्राप्ति होती है। साथमें भगवान् को घी का दीपक अर्पण करनेसे व्यक्ति समृद्ध और भाग्यशाली बनता है। जो व्यक्ति मंदिरमें प्रातः, संध्या और दोपहरमें गायत्री मंत्र का जप १०८ बार करता है वह पापमय कार्य में रत नही होता व्यासदेव उस व्यक्तिपर प्रसन्न होते है और उसे विष्णुलोक की प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति विद्वान ब्राह्मण को २८ अथवा १०८ मिट्टी के बर्तन भरके तिल दान करता है, वह काया, वाचा व मन से किये हुए सभी पापोंसे मुक्त होता है।

भगवान् जनार्दन जब तक निद्रामें रहते है, उस समय तक व्रतधारी व्यक्ति को पलंगपर नही सोना चाहिए। चार महिना मैथुन नही करना चाहिए। दिनमें एकबारही अन्न ग्रहण करनेका अथवा बिना परिश्रम जो कुछ भी प्राप्त उसे खाना यह व्रत धारण करना चाहिए। चातुर्मास में जो कोई भी भगवान् विष्णु के सामने गायन करता है उसे गंधर्व लोक की प्राप्ति होती है। जो गुड का त्याग करता है उसे पुत्रपौत्र की प्राप्ति होती है। तेल वर्ज्य करने से व्यक्ति रूपवान होता है, उसके सभी शुत्रओंका नाश होता है। जो व्यक्ति अपनी खुशी के लिए फूलोंका उपयोग नही करता उसे विद्याधर लोक की प्राप्ति होती है। पान खाना वर्जित करनेसे व्यक्ति निरोगी होता है। भगवान् श्रीकृष्ण की प्रसन्नता के लिए जो दही-दूध का त्याग करता है उसे गोलोक की प्राप्ति होती है। जो नाखून अथवा केश नही काटता उस व्यक्तिको भगवान् के चरणकमलों को स्पर्श करनेका पुण्य मिलता है। जो भगवान् के मंदिर की परिक्रमा करता है वह हंसविमान में सवार होकर भगवद्धाम को जाता है।

ও ও ও

१७. कामिका एकादशी

ब्रह्मवैर्वत पुराणमें युधिष्ठिर महाराज और भगवान् श्रीकृष्ण के संवाद में कामिका एकादशी का महात्म्य वर्णित है।

युधिष्ठिर महाराज ने कहा, ''हे भगवान् ! आपसे मैने देवशयनी एकादशी के बारे में सुना। कृपया आप श्रावण मास के कृष्ण पक्ष में आनेवाली एकादशी का वर्णन करे।''

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, ''हे राजन ! ध्यानसे सुनिए ! बहुत पहले नारदजीने यही प्रश्न ब्रह्माजीको पूछा था। इस तिथि को किसकी और कैसी उपासना करनी चाहिए इस बारे में भी पूछा था।''

जगद्‌गुरु ब्रह्माजीने तभी कहा, ''इस एकादशीको 'कामिका' कहा जाता है। इसके महात्म्य को श्रवण करनेसे 'वाजपेय' यज्ञ करनेका फल प्राप्त होता है। इस तिथि को शंख, चक्र, गदा, पद्‌म धारण करनेवाले भगवान् विष्णुकी पूजा करनी चाहिये। इस दिन भगवान विष्णुकी उपासना करने से पवित्र तीर्थस्नान जैसे की गंगा,काशी,नैमिशारण्य,पुष्कर जैसे पवित्र स्थानों पर स्नान करनेका पुण्य प्राप्त होता है। सूर्यग्रहण के समय केदारनाथ अथवा कुरुक्षेत्र में स्नान करनेवाले पुण्य से हजारों गुना अधिक पुण्य केवल कामिका एकादशी को विष्णुकी पूजा करने से मिलता है।''

जिस प्रकार कमलको पानी स्पर्श नही कर सकता, उसी प्रकार कामिका एकादशी करनेवाले को पाप स्पर्श नही कर सकता। जो कोई भी तुलसीपत्र से भगवान् हरिकी उपासना करता है, वह सभी पापोंसे मुक्त होता है। तुलसी के केवल दर्शन मात्र से सभी पाप नष्ट हो जाते है। तुलसीदेवी को स्पर्श करनेसे हम पावन बन जाते है। उसकी प्रार्थना करने से व्यक्ति रोगमुक्त हो जाता है और उसे स्नान कराने से यमराजका मुख देखना असंभव है तथा उनका डर नही रहता।

तुलसी रोपन करने से भगवान श्रीकृष्ण के साथ रहने का भाग्य प्राप्त होता है और उनके चरणकमलोंपर तुलसी अर्पण करनेसे भक्ति प्राप्त होती है। एकादशी के दिन तुलसी महारानीको घी का दीपक और प्रणाम अर्पण करनेसे उससे प्राप्त होनेवाले पुण्य का हिसाब करने के लिए चित्रगुप्त भी असमर्थ है। कामिका एकादशी का व्रत करनेसे भ्रूणहत्या तथा ब्रह्महत्या जैसे महापातक से भी मुक्ति मिलती है । इस महात्म्य का श्रद्धा से जो भी श्रवण अथवा कथन करेगा उसे वैकुंठ प्राप्ति होती है ।

ぐ ぐ ぐ

१८. पवित्रा एकादशी

भविष्योत्तर पुराणमें पवित्रा एकादशी का महात्म्य भगवान् श्रीकृष्ण और महाराज युधिष्ठिर के संवादों में मिलता है ।

एक बार युधिष्ठिर महाराजने श्रीकृष्ण को पूछा, ''हे मधुसूदन ! श्रावण मास के शुक्ल पक्ष में आनेवाली एकादशी का नाम, उसका महात्म्य क्या है ? इस बारेमें कृपया आप विस्तारसे वर्णन करे।''

भगवान् श्रीकृष्णने कहा, ''इस एकादशी का नाम 'पवित्रा' है । जो भी इस व्रत की महिमा को श्रवण करेगा उसे 'वाजपेय' यज्ञ के फल की प्राप्ति होगी ।''

बहुत वर्षों पहले द्वापर युग के प्रारंभिक कालमें महीजित नामक राजा महिष्मतीपुर नामक राज्य पर राज करते थे। अपनी संतान की तरह प्रजा का रक्षण करते थे। एक बार उन्होंने प्रजाको राजसभामें बुलाया और कहा, ''प्रजाजन ! मैंने कभी भी किसी भी प्रकारका पापकर्म नही किया। अन्यायसे कभी धन ग्रहण नही किया। प्रजापर अन्याय नही किया। ब्राह्मणोंकी अथवा देवताओंकी संपत्ति नही छिनी। कानून सबके लिए एक समान है। उपयुक्त समय पर गुनाहों के लिए मैंने अपने रिश्तेदारोंको भी दंड दिया है। धार्मिक और पवित्र मेरे शत्रुको भी मैंने उपयुक्त आदर और सम्मान भी दिया है। हे ब्राह्मणों ! इस धार्मिक मार्ग का आचरण करते हुए भी मुझे पुत्रप्राप्ति नही हुई । कृपया आप इसपर विचार करके मुझे मार्गदर्शित करे।''

राजाका कथन सुनने के पश्चात सभी ब्राह्मणोंने इकठ्ठा होकर विचार किया और अनेक आश्रमोंको भेट देते हुए भूत, वर्तमान और भविष्य जाननेवाले ऋषियोंको इसका कारण पूछने का निर्णय लिया। इसलिए उन्होंने वन में जाकर अनेक आश्रमोंको भेट दी अंत में भ्रमण करते हुए लोमश ऋषिके पास पहुँचे। वे बहुत ही कठोर तपस्या कर रहे थे । उनका शरीर आध्यात्मिक था। वे आनंद से परिपूर्ण थे और कठोर उपवासोंका पालन करते थे। वे आत्मसंयमी और सभी शास्त्रोंकेज्ञाता थे। उनका आयुमान ब्रह्मदेव जितना ही है, बहुत ही तेजस्वी, उनके शरीरपर असंख्य केश थे। जब ब्रह्मदेव का एक दिन अर्थात एक कल्प होता तो उनके शरीरका एक केश गिर पडता । इसीलिए उन्हे लोमश कहा जाता था। वे त्रिकालज्ञ थे।

लोमश ऋषिकों देखकर आनंदित हुए राजाके सलाहकारोंने नम्रतापूर्वक कहा, ''हमारे उत्तम भाग्यसे ही आप जैसे महात्मा के दर्शन हुए।'' लोमश ऋषिने पूछा, ''आप सभी कौन है ? यहाँ आनेका प्रयोजन क्या है? मेरी स्तुति करनेका कारण क्या है।'' ब्राह्मणोंने कहा, ''हमारे ऊपर आई हुई विकट समस्या के निर्मूलन करने के लिए हम यहाँ

आए है। हे ऋषिवर! हमारे राजा महीजित निपुत्रिक है। उन्होंने संतान की तरह हमें पाला है। राजा का दुःख हमसे नही देखा जाता। इसीलिए कठोर तपस्या करने के लिए हम यहाँ आए है। पर हमारे महद्भाग्यसे आप जैसे महात्मा की भेट हुई है। आप जैसे महान व्यक्ति के दर्शन से कार्य सिद्धि होती है। हे द्विजवर! हमारे निपुत्र राजाको पुत्र होने के लिए आप हमें कृपया उपाय बताएँ।''

यह सुनते ही लोमश ऋषि ध्यानस्थ हो गए और महीजित राजाके पिछले जन्म का वृत्तांत जानकर कहने लगे, यह राजा पिछले जन्म में वैश्य था। व्यापार के लिए एक गांव से दूसरे गांव भटकता था। एक बार घुमते हुए वह प्यास से व्याकुल हुआ। उस दिन द्वादशी थी। प्यास से व्याकुल घुमते हुए एक तालाब के पास पहुँचे। पानी पीने के इच्छा से वो किनारे पर पहुँचे, इतने में नए बछडे को जन्म देने के पश्चात गाय बछडे के साथ आकर पानी पीने लगी। उन्होंने फौरन उसे दूर करके खुद पानी पीने लगे। यह बडा पाप उनसे हुआ। इस पाप के कारण उन्हे पुत्र-प्राप्ति नही हो रही है।

यह सुनकर राजाके सलाहकार ब्राह्मणोंने पूछा, ''किस पुण्यसे अथवा व्रतसे राजा इस पाप से मुक्त होंगे? इस विषय में आप हमे बताइये।''

तभी लोमश ऋषिने कहा, ''श्रावण मास के शुक्ल पक्ष में आनेवाली 'पवित्रा' नामकी एकादशी है। राजा और आप सब इस व्रत का पालन करें। उसके पश्चात आप सभी इस व्रत के पालन से मिलनेवाला सभी पुण्य राजाको दीजिए। उससे राजाको पुत्रप्राप्ति अवश्य होगी।'' लोमश ऋषिकी यह बात सुनकर सभी प्रसन्न हुए। उनको आनंदपूर्वक प्रणाम किया। राजाके पास सभी लौट आए और सारा वृत्तांत राजाकों कह सुनाया। राजाने भी आनंद से सभी प्रजा के साथ पवित्रा एकादशी का पालन किया। द्वादशी के दिन सभीने व्रत के प्रभाव से प्राप्त हुआ पुण्य राजाको प्रदान किया। कुछ दिनों पश्चात रानी को गर्भ धारणा हुई और उसने सुंदर पुत्र को जन्म दिया।

''हे युधिष्ठिर महाराज !

जो कोई भी इस व्रतका पालन करता है वह सभी पापोंसे मुक्त होकर इस जन्म में और अगले जन्म में सुख की प्राप्ति करता है। जो कोई भी इस व्रत का महात्म्य श्रद्धापूर्वक सुनेगा अथवा कहेगा, उसे इस जन्म में पुत्रप्राप्ति का सुख मिलता है तथा अगले जन्म में भगवद्धामकी प्राप्ति होगी।''

ᪿ ᪿ ᪿ

१९. अन्नदा एकादशी

ब्रह्मवैवर्त पुराणमें श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर महाराज के संवाद में अन्नदा एकादशी के महात्म्य का वर्णन किया गया है ।

युधिष्ठीर महाराजने पूछा, ''हे कृष्ण ! भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष में आनेवाली एकादशी का नाम क्या है? कृपया विस्तारसे आप वर्णन करे।''

भगवान् श्रीकृष्णने कहा, ''हे राजन् ! सब पापोंको नष्ट करनेवाली इस एकादशी का नाम अन्नदा है। इस व्रत का पालन करके जो कोई भी भगवान् ऋषिकेश की पूजा करता है वह सब पापोंसे मुक्त होता है।''

बहुत पहले हरिश्चंद्र नामक एक सम्राट थे । वह बहुत ही सत्यवादी थे अनजानें में किए गए पाप के कारण और अपने वचन की पूर्ति के लिए उन्होंने अपना राज्य गँवाया। इतना ही नही, पत्नी तथा पुत्र को भी बेचना पडा। हे राजन्! उस पुण्यवान राजाको चांडाल के पास सेवक बनकर रहना पडा। फिर भी उसने सत्य की राह नही छोडी। चांडाल के आदेश पर मजदूरी करके वह राजा मृत शरीर के वस्त्र इकठ्ठे करते थे । इस प्रकार शुद्र काम करते हुए भी वह सत्यवादी ही रहे। अपने आचारण से उनका कभी पतन नही हुआ। इसी तरह उन्होंने बहुत वर्ष निकाले।

एक दिन राजा अपनी दुर्भाग्य पर विचार कर रहे थे कि मुझे अब क्या करना चाहिए? कहाँ जाना चाहिए? इससे मेरा छुटकारा कब होगा? राजा की ऐसी दुर्दशा देखकर गौतम ऋषि पास आए। ऋषिको देखकर राजाको विचार आया कि, केवल लोककल्याण हेतु ब्रह्मदेव ने ब्राह्मणोंको निर्माण किया है। ऋषिको प्रणाम करके राजाने अपनी दुःखद परिस्थिती बताई।

राजा की दुर्दशा देखकर गौतम ऋषिने विस्मय से कहा, ''हे राजन् ! आपके अच्छे कर्मोंसे जल्दी

ही श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की अन्नदा एकादशी आ रही है। इस दिन व्रतका आप पालन करें और जागरण करे। आप सभी विपत्तियोंसे मुक्त हो जाओगे। हे राजन् ! केवल आपके लिए मैं यहाँ आया था।''

राजा को उपदेश देकर गौतम ऋषि अंतर्धान हो गए। राजाने इस व्रत का पालन किया और वे सभी विषाद से मुक्त हुए ।

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, ''हे नृपेंद्र ! अनेक वर्षों तक भोगनेवाले दुख इस अद्भुत व्रत के प्रभाव से फौरन नष्ट हो जाते है। इस व्रत के प्रभाव से राजा हरिश्चंद्र को उनकी पत्नी तथा मृत पुत्र जीवित होकर वापस मिला। उनका राज भी उन्हे प्राप्त हुआ। अनेक वर्षो के पश्चात राजा हरिश्चंद्र, उनके सम्बन्धी और उनकी प्रजा इन्होंने भगवद्धामकी प्राप्ति की। हे राजन ! जो कोई भी इस व्रत का पालन करता है उसे आध्यात्मिक जगत् की प्राप्ति होगी।''

जो काई भी इस व्रत का महात्म्य श्रद्धा से सुनेगा अथवा पढेगा उसे अश्वमेध यज्ञ करने का पुण्य प्राप्त होता है ।

ଔ ଔ ଔ
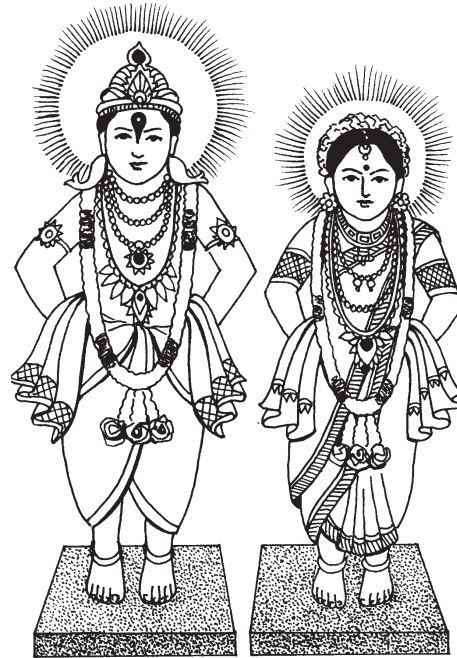
२०. पार्श्व एकादशी

पार्श्व एकादशी को वामन अथवा परिवर्तिनी एकादशी भी कहते है। ब्रह्मवैवर्त पुराणमें भगवान् श्रीकृष्ण और महाराज युधिष्ठिर के संवादमें इसकी महिमा का वर्णन है ।

युधिष्ठिर महाराजने भगवान् श्रीकृष्ण को पूछा, ''हे जनार्दन ! भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष में आनेवाली एकादशी का नाम क्या है ? इस व्रत करने की विधि और करने से प्राप्त होनेवाला फल इस बारें में कृपया विस्तारसे वर्णन करे ।''

भगवान् श्रीकृष्णने कहा, ''हे राजन् ! इस एकादशी को पार्श्व कहते है। इस व्रतके पालनसे व्यक्ति सभी पापोंसे मुक्त होकर मुक्ति प्राप्त करता है। इस एकादशी के केवल महात्म्य श्रवण करने से ही व्यक्ति सभी पापोंसे मुक्त हो जाता है। वाजपेय यज्ञ करने से भी अधिक फल इस व्रत के पालन से प्राप्त होता है। इस एकादशी को जयन्ती एकादशी भी कहते है। इस दिन भगवान वामनदेव की उपासना करनी चाहिए। जिससे व्यक्ति को आध्यात्मिक जगत की प्राप्ति होती है । इस एकादशी के दिन भगवान मधुसूदन अपने बाएँ से दाएँ करवट लेते है। इसीलिए इस एकादशी को पार्श्व परिवर्तिनी एकादशी कहा जाता है।''

युधिष्ठिर महाराजने पूछा, ''हे जनार्दन ! मेरे कुछ प्रश्नोंका समाधान करे। हे देवदेवेश्वर! आप कैसे सोते है ? किस प्रकार से करवट बदलते है? चातुर्मास्य का पालन किस प्रकार से करना चाहिए ? आप की निद्रा के समय दूसरे लोग क्या करते है ? आप बलि महाराज को बंधन में क्यों रखते है ? हे स्वामी ! मेरी ये सारी शंकाए आप कृपया दूर किजिए ।''

भगवान् श्रीकृष्णने कहा, ''त्रेतायुग में दैत्य कुलमें जन्मा बलि नामक मेरा एक भक्त था। अपने परिवार के साथ वो मेरी पूजा-अर्चना करता था। उसने ब्राह्मणोंकी पूजा और अनेक यज्ञ भी किए थे। जिससे

वो इतना शक्तिशाली बन गया कि उसने इंद्र को पराजित किया और स्वर्ग का राजा बन गया। सभी देवदेवता, ऋषि मेरे पास आए। उनके कल्याण के लिए मैने वामनावतार लिया और राजा बलि जहाँ पर यज्ञ कर रहा था वहाँ पहुँचा।''

बलिराजा के पास मैने तीन पग भूमि माँगी। इससे भी अधिक माँगने की बिनती बलिराजा ने मुझसे की । परंतु मैंने दृढ निश्चय से केवल तीन मग भूमि ही माँगी। दूसरा कौनसा भी विचार न करके उसने दान में ३ पग भूमि दे दी। तत्काल मैंने महाकाय रूप धारण किया जिसके एक पगमें सप्तपाताल, दूसरे पग में आकाश के साथ सातों लोक को लिया और तीसरा पग रखने के लिए जगह मांगी। तीसरे पग के रुप में नम्रतापूर्वक बलिने अपना मस्तक आगे किया। उसके नम्रता से प्रसन्न होकर नित्य उसके साथ रहने का मैने आशिर्वाद दिया।

उसी एकादशी के दिन वामनदेव के विग्रह की स्थापना महाराज बलि के निवासपर हुई। मेरा दूसरा विग्रह क्षीरसागर में अनंत शेषपर स्थापन करते है। शयन एकादशी से उत्थान एकादशी तक मै निद्रावस्था में रहता हूँ। इन चार महीनों में हर एक को मेरी विशेष पूजा करनी चाहिए। चातुर्मास में आनेवाली सभी एकादशी का हर एक को दृढतापूर्वक पालन करना चाहिए ।

इस एकादशी के व्रत पालन से सहस्त्र अश्वमेध यज्ञ करने का फल मिलता है ।

ঙ ঙ ঙ

२१. इंदिरा एकादशी

ब्रह्मवैवर्त पुराणमें भगवान् श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर महाराज के संवादोंमें इंदिरा एकादशी के महात्म्य का वर्णन है ।

युधिष्ठिर महाराजने पूछा, ''हे मधुसूदन ! आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में आनेवाली एकादशी का नाम क्या है ? उसे पालन करने की विधि क्या है? इस व्रतसे क्या फलप्राप्ति होती है ? कृपया विस्तारसे वर्णन करे।''

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा,''इस एकादशी का नाम 'इंदिरा' है। इस व्रत के पालन से पतित पितरों का उद्धार होता है और व्यक्ति सभी पापोंसे मुक्त हो जाता है। हे राजन्! सत्युग में इंद्रसेन नामक राजा था। अपने सभी शत्रुओंको पराजित करके वह महिष्मतीपुरी राज्यपर राज करता था। अपने पुत्रपौत्र के समेंत वह आनंद के साथ रहता था। उसे भगवान् विष्णु के प्रति भक्ति थी, इसलिए वह नित्य मुक्तिदाता गोविंद का स्मरण करता था।

एक बार राजा अपने सिंहासनपर आनंद से विराजमान था। तभी आकाश मार्गसे देवर्षि नारद वहाँ पधारे। राजा उन्हे देखकर सिंहासन से उठकर उन्हे प्रणाम करके पूजा-अर्चना की। तभी देवर्षि नारदने राजाको पूछा, ''हे राजन् ! आपके राज्य में सभी सुखी है ? आप धर्म का पालन करते हुए राज कर रहे है ना ? तथा भगवान् विष्णुके चरणकमलों मे आपकी भक्ति है ना?''

तभी राजाने कहा, ''हे देवर्षि ! आपकी कृपासे सब ठीक है । यज्ञों के फलहेतु ही आज आपके दर्शन हुए। कृपया आपके आने का उद्देश्य बताईये।''

राजा के नम्र वचन सुनकर नारदमुनि ने कहा, ''हे नृपश्रेष्ठ! एक घटी हुई अदभुत घटना सुनो। ब्रह्मलोकसे मैं यमलोक गया था। वहाँ पर यमराज ने मेरा योग्य स्वागत

किया। वहाँ पर मैंने आपके पुण्यवान पिताश्री को देखा । उन्होंने मेरे पास तुम्हारे लिए संदेश दिया है वह है, ''हे देवर्षि ! मेरा पुत्र इंद्रसेन महिष्मतीपुरी का राजा है । उससे आप कहना कि अनजानें में किए गये पापकर्मों के कारण मैं यमलोक में हूँ । मेरे उद्धार के लिए इंदिरा एकादशी का व्रत पालन करके उसका फल मुझे अर्पण करे ।''नारदमुनि ने आगे कहा, ''हे राजन् ! आपके पिताश्री को भगवद्धाम प्राप्ति होने के लिए आपको इंदिरा एकादशी का व्रत करने को कहा है ।''

तभी राजाने पूछा, ''हे देवर्षि ! कृपया इस व्रत की विधि आप कहे ।''

नारदमुनीने कहा, ''हे राजन् ! दशमी के दिन प्रातःकाल उठकर स्नान के पश्चात पितरोंको तर्पण देना चाहिए । केवल एक बार ही भोजन और रात को चटाईपर सोना चाहिए । एकादशी के दिन प्रातःकाल उठकर स्नान करे। उसके बाद दिनभर प्रजल्प न करनेका व्रत धारण करके पूर्ण उपवास करना चाहिए। भगवान् अरविंद मै आपकी शरण में आया हूँ, ऐसी प्रार्थना करनी चाहिए।

मध्यान्ह के समय शालग्राम के सामने पितरों को तर्पण अर्पण करके ब्राह्मणों को भोजन और दक्षिणा देकर संतुष्ट करना चाहिए। बचा हुआ अन्न गायको देना चाहिए । चंदन, फूल, धूप, दीप और भोग अर्पण करके भगवान् हृषिकेश की पूजा करें। भगवान् के नाम का गुणगान, लीलाओंका श्रवण, कथन, पढना, कीर्तन इत्यादि करके रातभर जागरण करना चाहिए। द्वादशी के दिन भगवान् श्रीहरी की पूजा करके ब्राह्मणों को भोजन अर्पण करना चाहिए। उसके बाद अपने बंधु, पुत्रपौत्र के साथ उपवास छोडना चाहिए। भोजन करते समय शांति होनी चाहिए। हे राजन ! मेरे कहेनुसार अगर आप व्रतका पालन कर रहे है तो आपके पितरोंको जल्दी ही भगवद्धाम की प्राप्ति होगी।'' इतना कहकर देवर्षि नारद अंतर्धान हो गए ।

देवर्षि नारद के कहेनुसार राजाने व्रत का पालन किया। इस व्रत के प्रभावसे स्वर्गलोक से पुष्पवृष्टी हुई और राजा के पिताश्री गरुडपर बैठकर वैकुंठ गए । उसके बाद राजानें अनेक वर्ष आनंदपूर्वक राज्य किया। अपने पुत्र को राज सौंपकर राजा स्वयं भगवद्धाम को चले गए ।

२२. पाशांकुश एकादशी

आश्विन मास के शुक्ल पक्ष में आनेवाली पाशांकुश एकादशी का महात्म्य ब्रह्मवैवर्त पुराणमें श्रीकृष्ण और महाराज युधिष्ठिर के संवादों में वर्णन हुआ है।

युधिष्ठिर महाराजने पूछा, ''हे मधुसूदन ! आश्विन मास के शुक्ल पक्ष में आनेवाली एकादशी का नाम क्या है ? इस के बारेमें आप विस्तारसे कहिए।''

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, ''हे नृपश्रेष्ठ ! इस एकादशी का नाम 'पाशांकुश' है। सब पापनाशनी एकादशी के महात्म्य को सुनिए! इस एकादशी को विशेष करके भगवान् पद्मनाभकी उपासना करनी चाहिए। इस एकादशी के प्रभाव से व्रत करनेवाले की इच्छा पुर्ती होकर, स्वर्गीय सुख तथा मुक्ति मिलती है। भगवान् विष्णु के केवल नाम स्मरण से विश्व के सभी तीर्थों के भ्रमण का फल प्राप्त होता है। अज्ञानवश पापकर्मोंमें लिप्त मनुष्य भी अगर भगवान हरि के चरणोंका आश्रय लेके उन्हें प्रणाम करनेसे उसके नरक का मार्ग बंद हो जाता है।

जो वैष्णव शिवजी के प्रति अपराध करते है तथा जो शैव विष्णु के प्रति अपराध करते है वे दोनों भी नरक में जाते है। अश्वमेध यज्ञ करने का या सैकंडों राजसूय यज्ञ करके प्राप्त होनेवाला पुण्य ये पाशांकुश एकादशी करने के फल से १/१४ अंश जितना भी नही है । इस एकादशी व्रत के पालन से प्राप्त होनेवाला पुण्य और कौनसे भी व्रत से प्राप्त नही होता। इसलिए यह एकादशी भगवान् विष्णुको सबमें प्रिय है।

हे राजन्! जब व्यक्ति एकादशी का व्रत नही करता, तबसे पापपुरुष उसके शरीर में वास करता है। इस व्रत के पालनसे व्यक्ति को स्वर्गीय सुख, संपत्ति, सुंदर स्त्री और धान्य प्राप्त होता है। जो इस एकादशी का पालन करके रातभर जागरण करता है उसे निश्चित ही वैकुंठ की प्राप्ति होती है।

भगवान् श्रीकृष्ण ने आगे कहा, ''हे राजन ! इस एकादशी के पालन से व्यक्ति अपने पिता का, माता का तथा पत्नी के १० पिढियोंका उद्धार करता है। अपने बचपन में, यौवनावस्था में अथवा वृद्धावस्था में जो कोई भी इस व्रत का पालन करता है उसे भौतिक अस्तित्व से होनेवाले दुख भोगने नही पडते। जो कोई भी इस पाशांकुश अथवा पापांकुश व्रत का पालन करता है वो सभी पापोंसे मुक्त होकर विष्णुलोक प्राप्त करता है। इस दिन सोना, तिल, छाता, जूते, पानी, जमीन (भूमि) और गाय दान करनेसे दाताको यमके द्वार नही जाना पडता। जिंदा होकर भी जो पुण्यकर्म नही करता उसे मृत ही कहा जा सकता है। उसका श्वास लेना भी लोहार के धौकनी जैसा ही है।

हे नृपश्रेष्ठ! जो मनुष्य दूसरों के लिए यज्ञ करता है, कुएँ और सरोवर की खुदाई करता है, भूमि दान देता है अथवा दूसरे पुण्यकर्म करता है उसे यमलोक जाना नही पडता। गतजन्मों के अथवा पूर्वजन्मके पुण्यकर्मों के कारण ही लोग धनी, कुलवान, निरोगी तथा आयुष्यमान होते है। एकादशी व्रत के पालन से प्रत्यक्षतः कृष्णभक्ति मिलती है, तो अप्रत्यक्षतासे भौतिक सुखसुविधा मिलती है ।

२३. रमा एकादशी

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष में आनेवाली रमा एकादशी का महात्म्य ब्रह्मवैवर्त पुराणमें श्रीकृष्ण और महाराज युधिष्ठिर के संवादों में वर्णन हुआ है ।

एक बार युधिष्ठिर महाराजने पूछा, ''हे जनार्दन ! कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष में आनेवाली एकादशी का नाम और महात्म्य कृपया विस्तारसे वर्णन करे।''

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा,''नृपेंद्र,सब पाप नाशनी इस एकादशी को 'रमा' कहते है । बहुत वर्ष पहले मुचुकुंद नामका राजा था। उसकी देवराज इंद्र से अच्छी मित्रता थी। वरुण, कुबेर, यमराज, अग्नि ये भी उसके अच्छे मित्र थे। सभी धार्मिक तत्त्वों का पालन करते हुए वह अपने प्रजापर राज्य कर रहा था।

कुछ वर्षों के बाद राजा को पुत्री हुई जिसका नाम चंद्रभागा रखा गया। योग्य समय के उपरांत उसका विवाह चंद्रसेन राजा के पुत्र शोभन से हुआ। एक बार शोभन अपने ससुराल आया था, उसी दिन ही एकादशी थी। चंद्रभागा घबराकर विचार करने लगी, ''हे भगवान ! अब क्या होगा? मेरे पति बहुत ही कमजोर है, उनसे भुख सहन नही होती। मेरे पिताश्री बहुत ही कठोर है। दशमी के दिन ही अपनी प्रजा में सेवकोंको भेजकर एकादशीको अन्न कोई भी नही खाए यह आदेश देते है।''

शोभन ने इस नियम के बारे में सुना और पत्नी को कहा,''हे प्रिये! अब मैं क्या करुँ ? मेरे प्राण बचाने के लिए और राजाज्ञा को मानने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?''

चंद्रभागाने कहा, ''हे स्वामी! मनुष्य तो क्या हाथी, अश्व तथा अन्य प्राणियोंको भी आज हमारे पिताजी के साम्राज्य में कुछ भी खाने नहीं दिया जाता । अगर आपको कुछ खाना है तो आपके घर आपको लौटना पडेगा। इसीलिए योग्य विचार करके आप

उचित निर्णय लीजिए।''

अपनी पत्नी की बात सुनकर शोभनने कहा, ''तुमने सत्य कथन किया है। परंतु आज एकादशी व्रत करनेकी मेरी इच्छा है, मेरे भाग्य में जो होगा वही होगा।''

इस प्रकार सोचकर शोभनने उस दिन एकादशी व्रत किया । पर भूख-प्यास से वह व्याकुल होने लगा। सूर्यास्त के समय धर्मपरायण जीवात्मा और वैष्णव प्रसन्न हुए। भगवान् के नामसंकीर्तनमें उन्होंने रातभर जागरण किया। परंतु भूख के कारण शोभनने अपना शरीर त्याग दिया। सूर्योदय के पूर्व ही मुचुकुंद राजाने शोभन के शरीर का अंतिम संस्कार भी कर दिया। लेकिन चंद्रभागा को सती जाने की अनुमति नही दी । पती के श्राद्ध के पश्चात चंद्रभागा अपने पिता के घर रहने लगी।

रमा एकादशी के पालन से शोभन मंदार पर्वत के शिखरपर बसनेवाले देवपुरी राज्य का राजा बना । रत्नों से सुशोभित सुवर्ण के खंबे और अमूल्य हीरेमोतीयोंसे जडित राजभवनमें वह रहने लगा। अनेक आभूषणोंसे युक्त शोभन बहुत सारे गंधर्व और अप्सराओं के द्वारे सेवित था।

मुचुकुंदपुर का सोमशर्मा नामक ब्राह्मण तीर्थों की यात्रा करते हुए अचानक एक दिन देवपुरी में पहुँचा। शोभनको अपने राजा का जामाता समझकर वो उनके पास गया । ब्राह्मणको अपने सामने देखकर राजा अपने सिंहासन से उठे और प्रणाम करके ब्राह्मण के सामने खडे रहे । उसके पश्चात राजाने ब्राह्मण का, राजा मुचुकुंद का, चंद्रभागा तथा मुचुकुंदपुर की प्रजाका कुशल-मंगल पूछा। सभी लोग सुखसे और शांतिसे रह रहे है ऐसा ब्राह्मणने उत्तर दिया। आश्चर्यसे ब्राह्मणने राजा को पूछा, ''हे राजन् ! इतनी सुंदर नगरी मैंने कभी नही देखी। ऐसा राज्य आपको कैसे प्राप्त हुआ,इस विषय में आप हमें बताईए ।''

तभी राजाने कहा, ''रमा एकादशी का व्रत करनेसे यह अशाश्वतराज्य मुझे मिला है। लेकिन ये राज्य किस प्रकार शाश्वत होगा इस विषय में आप मेरा मार्गदर्शन करे । शायद अश्रद्धा से मैंने इस व्रत का पालन किया होगा। इसीलिए यह अशाश्वत राज्य मुझे मिला है । कृपया आप सब ये चंद्रभागा को कहिए । मेरे मत के अनुसार केवल वह इस राज्यको शाश्वत बना सकती है।''

यह सुनकर वह ब्राह्मण मुचुकुंदुपरी में लौट आया। चंद्रभागा को पूरा वृत्तांत कथन किया। सब सुनकर चंद्रभागाने कहा, ''हे ब्राह्मणदेव ! आप जो भी कुछ कह रहे है वो मुझे केवल एक स्वप्न के भांति प्रतीत हो रहा है।'' ब्राह्मणने कहा, ''हे राजकन्ये ! मैंने स्वयं तुम्हारे पतिको देवपूरी में देखा है। उसका राज्य सूर्य के समान तेजस्वी है। उस राज्य को शाश्वत बनाने की बिनती तुम्हारे पतिने की है ।'' चंद्रभागा ने कहा, ''हे ब्राह्मण! मै

अपने पुण्य के प्रभावसे वो राज्य शाश्वत बना दूँगी। आप मुझे वहाँ ले चलिए। अलग हुए दोनोंको पुनः मिलानेका पुण्य आपको प्राप्त होगा।''

उसके पश्चात सोमशर्मा ब्राह्मणने चंद्रभागाको मंदार पर्वत पर वामदेव के आश्रममें ले गए और उन्हें पूरा वृत्तांत सुनाया । वामदेवने चंद्रभागाको वैदिक मंत्र की दीक्षा दी। वामदेव से प्राप्त मंत्र के प्रभावसे तथा रमा एकादशी के पालन से चंद्रभागाको दिव्य शरीर प्राप्त हुआ। उसके बाद वह अपने पतिके सामने गई।

अपनी पत्नी को देखते ही शोभन को प्रसन्नता हुई। चंद्रभागाने कहा, ''कृपया आपके हित के लिए मेरे दो वचनोंको सुनिए। अपने आठ वर्ष की आयु से मैं रमा एकादशी का पालन कर रही हूँ । इस व्रत पालन के प्रभाव से आपका राज्य प्रलयतक शाश्वत और समृद्ध रहेगा।'' उसके बाद वह अपने पति के साथ आनंदपूर्वक रहने लगी। इसीलिए हे राजन ! रमा एकादशी ये कामधेनू अथवा चिंतामणीसमान सभी की सभी इच्छाएँ पुर्ती करनेवाली है।''

भगवान् श्रीकृष्ण ने आगे कहा, ''हे राजन् ! इस प्रकार मैंने तुम्हें इस एकादशी के महात्म्य का कथन किया है । कृष्ण पक्ष की तथा शुक्ल पक्ष की दोनों भी एकादशी का व्रत पालन करनेवाले को मुक्ति मिलती है। जो भी इस व्रत की महिमा सुनता है वह सभी पापोंसें मुक्त होकर आनंद से वैकुंठ की प्राप्ति करता है ।''

ଓ ଓ ଓ

२४. उत्थान एकादशी

स्कन्द पुराणमें ब्रह्मदेव तथा नारदमुनी के संवादोंमे उत्थान अथवा प्रबोधिनी एकादशी की महिमा कही गयी है ।

एकबार ब्रह्मदेव देवर्षि नारद को कहने लगे, ''हे ऋषिवर! सभी को पुण्य, आनंद और मोक्ष प्रदान करनेवाली उत्थान एकादशी के बारे में मै तुम्हे कहता हूँ । कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में यह एकादशी आती है। इस एकादशी के पालन से मिलनेवाला पुण्य सहस्र अश्वमेध यज्ञ या सौ राजसूय यज्ञ करके मिलनेवाले पुण्य से भी कई गुना अधिक है।''

यह सुनने के पश्चात नारदजीने पूछा, ''हे पिताश्री ! एक समय खाने से अथवा पूर्ण उपवास करके प्राप्त होनेवाले फल के विषय में कृपया आप बताईये।''

ब्रह्मदेव ने कहा, ''एकादशी को एक समय खानेसे उसके केवल एक जन्म के पाप नष्ट होते है। जो केवल रसाहार करता है उसके दो जन्मोंके पापोंका नाश होता है। पर जो पूरा दिन उपवास करता है उसके सात जन्मों के पाप नष्ट होते है।''

''हे पुत्र ! उत्थान एकादशी के पालन से त्रिभुवन में अनिश्चित, न मिलनेवाला और बहुत ही दुर्लभ ऐसा पुण्य प्राप्त होता है। मंदार पर्वत के समान पाप भी इस व्रत के प्रभाव से नष्ट हो जाते है। इस दिन के पुण्य की तुलना सिर्फ सुमेरु पर्वत से ही की जा सकती है। जो विष्णु की भक्ति नही करते, परस्त्री भोग करते है, जो नास्तिक है, वेदोंका अपमान करते है, जो मूर्ख है उनके लिए धार्मिक तत्त्व का प्रश्न ही नही आता। इसीलिए किसी को भी पाप नही करना चाहिए सिर्फ पुण्य कर्म ही करना चाहिए। पुण्य कर्मों में लगने से धार्मिक तत्त्वों का नाश नहीं होता। जो भी निश्चयपूर्वक उत्थान एकादशी का पालन करता है उसे सौ जन्मोंके पापों से मुक्ति मिलती है। जो भी रात को जागरण करता है उसके भूत-वर्तमान-भविष्य की पिढियाँ वैकुंठ प्राप्त करती है।

हे नारद ! जो भी कार्तिक मास में विष्णुकी पूजा तथा एकादशी व्रत का

पालन नही करता उसके सभी पुण्यों का क्षय होता है। इसीलिए निश्चितरूपसे हर एक को कार्तिक मास में विष्णु की उपासना करनी चाहिए। इस मास में अन्यद्वारा बनाया अन्न न खाने से चंद्रायण व्रत का पुण्य मिलता है। कार्तिक मास में जो भी भगवान् विष्णु के गुणोंका, लीला का श्रवण करता है उसे १०० गाय दान करने का पुण्य प्राप्त होता है। नियमित वैदिक शास्त्रों का अध्ययन करनेसे हजारों यज्ञों का फल मिलता है। जो भगवद्-कथा के श्रवण के पश्चात वक्ता को दक्षिणा देता है उसे वैकुंठ की प्राप्ति होती है।''

नारदमुनि ने कहा, ''हे स्वामी! कृपया यह एकादशी कैसी करनी चाहिए इस विषय में आप हमें बताईये।

पितामह ब्रह्मदेव ने कहा,''हे द्विजश्रेष्ठ! प्रातःकाल स्नान के पश्चात भगवान् केशव की उपासना करे। इस तरह व्रत धारण करे कि,
'हे अरविंदाक्ष! एकादशीको मैं अन्न ग्रहण नही करुँगा। केवल द्वादशी को ही अन्न ग्रहण करुँगा। हे अच्युत! कृपया आप मेरी रक्षा करे।''

ब्रह्मदेव ने आगे कहा, ''संपूर्ण दिन भक्तिभावसे व्रत का पालन करना चाहिए। रातमें भगवान् विष्णु के पास बैठकर भजन-कीर्तन-लीला का श्रवण करके जागरण करना चाहिए। एकादशी दिन लोभ की वृत्ति का त्याग करना चाहिए। जो भी पुण्यवान इस प्रकार से व्रत का पालन करता है,उसे अंतिम ध्येय की प्राप्ति होती है। जो कोई भी इस दिन भगवान जनार्दन को कदंब के फूल अर्पण करता है, उसे कभी यमलोक नही जाना पडता। जो गरुडध्वज भगवान विष्णुको कार्तिक मास में गुलाब के फूल अर्पण करता है उसे निश्चित ही मुक्ति प्राप्त होती है। जो कोई भी अशोक वृक्ष के फूल भगवान् को अर्पण करता है उसे सूर्य-चंद्र होने तक दुख भोगना नही पडता। शमी वृक्ष के पत्तों से जो भगवान् की पूजा करता है,उसे यमराज कभी दंड नही देते। वर्षाऋतु में जो जगदीश्वर विष्णुकी पूजा चंपक फूलों से करता है उसका भौतिक विश्वमें जन्म नही होता। जो पीले रंग के केतकी के फूलों से भगवान् विष्णुकी पूजा करता है,वह करोडों जन्म में किए हुए पापों से मुक्त होता है। सहस्र दल लाल रंग के कमल के फूलों से जो भगवान जगन्नाथ की पूजा करते है, वह भगवान् के श्वेतदीप नामक धाम की प्राप्ति करते है।

हे द्विजश्रेष्ठ ! एकादशी के रात को जागरण करना चाहिए। द्वादशी के दिन विष्णु की पूजा करके ब्राह्मणकों भोजन खिलाकर व्रत पूर्ण करे। अपनी क्षमता के अनुसार आध्यात्मिक गुरु की पूजा करके उन्हे योग्य दक्षिणा देनी चाहिए। इससे भगवान् प्रसन्न होते है।

ଓ ଓ ଓ

२५. पद्मिनी एकादशी

युधिष्ठिर महाराजने पूछा, ''हे जनार्दन! अधिक मास के शुक्ल पक्ष में आनेवाली एकादशीका नाम क्या है? इस एकादशीका पालन कैसे करना चाहिए और इस व्रतके पालन से प्राप्त होनेवाले फल के बारे में कृपया आप विस्तार वर्णन करे।

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, ''हे राजन ! इस पवित्र एकादशी का नाम 'पद्मिनी' है। जो भी इस व्रत का पालन करता है उसे पद्मनाभ भगवान्‌के धामकी प्राप्ति होती है। इस के पालन से सभी पापोंका नाश होता है। ब्रह्मदेव भी इस एकादशी की महिमा कहने में असमर्थ है। यह एकादशी बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। बहुत पहले ब्रह्मदेवने नारदको व्रत धारण करनेवाले को ऐश्वर्य व मुक्ति प्रदान करनेवाली पद्मिनी एकादशी का महात्म्य बताया था।

दशमी के दिन से ही इस व्रत का पालन करना चाहिए। दूसरोंके द्वारा बनाए हुए अन्न का सेवन वर्जित है। काँस के बर्तन में पकाया हुआ अन्न नही खाना चाहिए । उबले चावल, घी और सेंदा हुआ मक्खन नही खाना चाहिए। धरतीपर चटाई बिछाके सोना चाहिए और ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

एकादशी के दिन प्रातःकाल को उठकर स्नान करना चाहिए। भगवान को चंदन, पुष्प, धूप, दीप, कर्पूर और जल अर्पण करना चाहिए। भगवान् के नाम का जप करना चाहिए। कौनसा भी प्रजल्प नहीं करे। अधिक मास में आनेवाली एकादशीको किसीने भी जल अथवा दूध प्राशन किया तो उसके व्रत का खंडन होता है। रातभर जागरण करके भगवान्‌के नाम, रूप और गुणका वर्णन करना चाहिए। रात के पहले प्रहर तक जागरण करनेसे अग्निष्टोम यज्ञ करने के फल की प्राप्ति होती है। दूसरे प्रहर तक जागरण करने से वाजपेय यज्ञ का फल,रात्रि के तीन प्रहर तक जागरण करने से अश्वमेध यज्ञ करने का फल तथा पूरी रात जागरण करनेसे राजसूय यज्ञ करनेका पुण्य प्राप्त होता है। द्वादशी के दिन वैष्णवोंको अथवा ब्राह्मणोंको अन्नदान करके व्रत पूर्ण करना चाहिए । इस प्रकार से जो भी इस व्रतका पालन करता है उसे निश्चित ही मुक्ति प्राप्त होती है।

हे अनघ! आपकी जिज्ञासानुसार मैंने इस व्रत का विधि महात्म्य बताया। बहुत पहले पुलत्स्य ऋषिद्वारा नारदमुनि को बताई गयी सुंदर कथा सुनो।

एक बार कार्तविर्यार्जुनने रावण को पकडकर बंदी बनाया। यह देखकर पुलत्स्य मुनी कार्तवीर्यार्जुनके पास जाकर रावण को छुडवाकर लेके आए। यह सुनकर नारदने पुलत्स्य मुनिकों नम्रतासे पूछा, ''हे मुनिवर! जिस रावणने सभी देवताओंको पराजित किया, फिर ऐसे बलवान रावणको कार्तवीर्यार्जुनने कैसे कैद किया? कृपया इस विषय में आप बताएँ ।''

पुलत्स्य मुनिने कहा, ''हे नारद! त्रेयायुग में हैहय कुल में जन्मा हुआ कार्तवीर्य नामक एक राजा था। महिष्मतीपुरी उसकी राजधानी थी। उसे सहस्र रानीयाँ थी। परंतु राज्य योग्य तरीकेसे संभाले,ऐसा एक भी पुत्र नही था। राजाने सभी व्रतोंका पालन किया था, साधुओं की सेवा की थी फिर भी उसे पुत्रप्राप्ति नही हुई। अपने राज्य की सारी जिम्मेदारी प्रधानमंत्री को सौंपकर राजा तपस्या करने के लिए घने वन में चले गए। राजभवन छोडते समय उनकी रानी पद्मिनी ने उन्हे देखा। वो इक्ष्वाकु वंशके हरिश्चंद्र राजा की पुत्री थी। अपने पतिको तपस्या के लिए जाता हुआ देखकर उसने अपने आभूषणों को त्याग दिया और अपने पति के साथ मंदार पर्वतपर चली गई।

कार्तवीर्य और पद्मिनीने मंदार पर्वत के शिखरपर दस सहस्र वर्ष तक कठोर तपस्या की। अपने पति का क्षीण शरीर को देखकर पद्मिनीने सती अनुसूया को पूछा, ''हे पतिव्रते! दस सहस्र वर्ष तपस्या करने के पश्चात भी मेरे पति को भगवान् केशव प्रसन्न नही हुए। कृपया मुझे आप ऐसा व्रत बताए कि जिसके पालनसे भगवान केशव प्रसन्न होकर पुत्र दे जो एक पराक्रमी राजा बने। महाराणी पद्मिनी की बातों से सती अनुसूया प्रसन्न हुई और उसने कहा, ''हर ३३ महिनों के पश्चात अधिक मास आता है। इस महिनमें दो एकादशीयाँ आती है। पद्मिनी और परम; इस एकादशी के व्रत पालनसे भगवान तुरंत प्रसन्न हो जाएंगे और तुम्हारी सभी इच्छाएँ पूरी हो जाएंगी।''

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा, ''अनुसूया के कहे अनुसार महाराणी पद्मिनी ने इस व्रत का पालन किया। इससे केशव गरुडपर बैठकर वहाँ आए और उन्होंने पद्मिनी को वर माँगने का आदेश दिया। प्रथम रानीने भगवान् को वंदन किया और प्रार्थना करने लगी। उसके बाद उन्होंने पुत्रप्राप्ति के लिए भगवान् से विनती की। भगवान्ने कहा, ''हे साध्वी! मैं तुमपर बहुत प्रसन्न हूँ । अधिक मास के इतना कौनसा भी मास मुझे प्रिय नहीं है। इस मास की एकादशी भी मुझे बहुत प्रिय है। तुमने मुझे प्रसन्न किया है, इसलिए निश्चित ही तुम्हारे पति की इच्छा मै पूर्ण करुँगा।''

पद्मिनी से वार्तालाप के पश्चात भगवान् कार्तवीर्य के पास आए और उन्होंने कहा, ''तुम्हारी पत्नी ने एकादशी व्रत का पालन किया है इससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ। इसलिए जो तुम्हारी इच्छा है वो माँगो।'' राजा को बहुत ही प्रसन्नता हुई। 'हमेशा विजय प्राप्त करनेवाला बलवान पुत्र' राजाने भगवान् के पास मांगा। उन्होंने कहा, ''हे मधुसूदन ! देवता, मनुष्य, नाग, राक्षस इनसे कभी भी पराजित न होनेवाला पुत्र मुझे आप दीजिए।'' इस वर को देकर भगवान् केशव वहाँ से अंतर्धान हो गए।

पहले जैसा अपना शरीर प्राप्त करके राजा-रानी अपने ऐश्वर्य संपन्न राजधानी को लौट आए। थोडे समय के बाद पद्मिनीने बहुत ही पराक्रमी पुत्रको जन्म दिया जिसका

नाम जिसका कार्तवीर्यअर्जुन हुआ। उसके जैसा पराक्रमी योद्धा इस विश्व में कोई भी नही था। दशमुखी रावणकों भी उसने पराजित किया था। इस सुंदर कथा को कहकर पुलत्स्य मुनिने वहाँसे प्रस्थान किया।''

भगवान् श्रीकृष्ण ने आगे कहा, ''हे अनघ ! इस प्रकारसे मैंने आपको अधिक मास में आनेवाली एकादशी का महात्म्य कहा है। जो कोई भी इस व्रतका पालन करता है उसे निश्चित ही वैकुंठ की प्राप्ति होती है।''

ঙ ঙ ঙ

२६. परम एकादशी

एक बार युधिष्ठिर महाराजने भगवान श्रीकृष्ण को पूछा, ''हे भगवान! अधिक मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम क्या है ? इस एकादशी व्रत को कैसे करना चाहिए। इस बारे में आप विस्तारसे कहिए।''

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा, ''हे राजन ! इस एकादशी का नाम 'परम' है। यह एकादशी भुक्ती तथा मुक्ति देनेवाली है। अन्य एकादशी जैसेही इस एकादशी को करना चाहिए। इस दिन व्रतधारी व्यक्ति को सभी का पालन करनेवाले भगवान विष्णु की पूजा करनी चाहिए। कांपिल्य नगर के ऋषिद्वारा सुनी हुई कथा मैं आपको कहता हूँ, वह सुनिए।''

''सुमेध नामक एक पवित्र ब्राह्मण था। वो अपने पवित्रा नामक पतिव्रता पत्नी के साथ कांपिल्य नगरमें रहता था। गत जन्मों में किए गए पापकर्म के कारण वह बहुत दरिद्र था। उसे भिक्षा भी नही मिलती। इसलिए उसे खाने के लिए अन्न, वस्त्र और सोने के लिए जगह का अभाव था। परंतु उसके सुंदर पत्नीने बहुत ही श्रद्धासे उसकी सेवा की। बहुत बार अतीथी की सेवा करते हुए वह स्वयं भूखी रहती। फिर भी उसने अपने पतिको कुछ न कहा।

दिन-ब-दिन कमजोर हो रही अपने पत्नी को देखकर ब्राह्मण स्वयं को धिक्कारने लगा और अपनी पत्नी से कहा, ''प्रिये ! बडे बडे लोगों के पास भिक्षा माँगकर भी, मुझे कुछ प्राप्त नही होता। क्या मुझे परदेस जाकर धन प्राप्त करना चाहिए ? शायद जो मेरे नसीब में होगा वह मुझे प्राप्त होगा। उत्साह के बिना कौनसा भी कार्य सिद्ध नही होता। इसलिए विद्वान,मनुष्य लोगों के उत्साह की प्रशंसा करते है।''

सुमेधके कथन के पश्चात उसकी पत्नी पवित्रा ने कहा, ''आप जैसा बुद्धिमान यहाँ पर कोई नही है। इस विश्व में हर एक को जो भी प्राप्त होता है, वो उसके पूर्वजन्म के कर्मोंके अनुसार। पूर्व जन्म में पुण्यकर्म नही होंगे तो कितने भी कठोर परिश्रम से भी जितना प्राप्त होना है उतनाही मिलेगा। पूर्व जन्म में अगर किसीने ज्ञान और धन दान किया होगा तो ही इस जन्म में उसे ज्ञान अथवा धन प्राप्त होता है। हे द्विजवर! मुझे तो लगता है कि पूर्वजन्म में आपने और मैंने कोई पूण्य ही नही किए है, जिससे इस जन्म में हमारी यह परिस्थिती है। हे स्वामी! मैं आपके सिवा एक पल के लिए भी नही रह सकती अगर मैं यहाँ रहूँ, तो सभी

लोग मेरा धिक्कार करेंगे। इसीलिए इधर आपको जो कुछ भी प्राप्त होता है उसमें ही हम सुखसे गुजारा कर लेंगे। इस नगर में ही निश्चित ही आपको सुख की प्राप्ति होगी।''

पत्नी का कथन सुनकर ब्राह्मणने परदेश जानेका विचार त्याग कर दिया। दैवयोग से एक दिन कौडिण्य ऋषि वहाँपर आए। उन्हें देखकर सुमेध और उनकी पत्नी ने आनंदित होकर प्रणाम किया। उन्हें आसन देकर योग्य प्रकारसे उनकी पूजा की। सुमेधने कहा, ''ऋषिवर ! आपके दर्शनसे हमारा जीवन धन्य हो गया।'' अपनी क्षमता के अनुसार उन्होंने ऋषि को भोजन दिया। उसके पश्चात पवित्रा ने उनको पूछा,''मुनिवर! दरिद्रता कैसे दूर होगी? धन प्राप्ति के लिए मेरे पति परदेस जा रहे थे, मैंने उन्हे जाने के लिए मना किया है। निश्चित ही यह हमारा सौभाग्य है कि आज आप यहाँ आए है। कृपया ऐसा कोई उपाय बताइये कि जिससे हमारी दरिद्रता दूर हो जाए।''

पवित्रा की बात सुनकर कौंडिण्य ऋषिने कहा, ''बहुत ही मंगल करनेवाली यह एकादशी अधिक मास के कृष्ण पक्ष में आती है और उसका नाम परम है। इसका सबसे पहले पालन कुबेरने किया था जिससे भगवान शिवजी उनपर प्रसन्न हुए थे और उन्होंने उसे ऐश्वर्य प्राप्त करनेका वर प्रदान किया। राजा हरिश्चंद्र ने भी इसी व्रतका पालन करके अपनी पत्नी, संतान और राज्य को पुनः प्राप्त किया। इसीलिए हे सुंदरी तुम भी इस व्रतका पालन करो।''

भगवान् श्रीकृष्णने कहा, ''हे पांडु पुत्र ! परम एकादशी के विषय के पश्चात कौण्डिण्य मुनिने पंचरात्री व्रत के बारे में कहा। पंचरात्री व्रत का पालन करनेसे मुक्ति प्राप्त होती है। परम एकादशी के दिन से ही पंचरात्री व्रत का पालन करने के लिए शुरुवात करनी चाहिए। जो भी पाँच दिन इस व्रत का पालन करता है वह अपने माता-पिता के साथ वैकुंठ लोक को प्राप्त करता है।''

कौण्डिण्य ऋषिके कहे अनुसार पति-पत्नीने इस व्रत का पालन किया। पंचरात्री व्रत के पालन से ब्रह्मदेव की प्रेरणा से राजकुमार उनके घर आया और उन्हे सुविधाएँ उपलब्ध है ऐसा घर दिया। साथ ही गाय भी ब्राह्मण को दान में दी। इस कृत्य से राजकुमार को भी मृत्यु के पश्चात वैकुंठ प्राप्त हुआ।

जिस प्रकार मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है, चतुष्पाद प्राणियों में गाय, देवताओं में इंद्र उसी प्रकार सभी मास में अधिक मास श्रेष्ठ है। इस महीने की पद्मिनी और परम ये दोनों एकादशी भगवान् हरिको बहोत ही प्रिय है। मानव देह प्राप्त करके

भी कोई भी एकादशी व्रत का पालन नही करता तो उसे ८४ लाख योनी में सुख प्राप्त नही होता। केवल उसे दुख ही प्राप्त होता है। पूर्व जन्म के पुण्य से ही मनुष्य देह की प्राप्ति होती है। इसीलिए हर एक को अवश्य ही एकादशी व्रत का पालन करना चाहिए। यह सुनकर पांडवोंने अपनी पत्नी सहित इस पवित्र एकादशी के व्रत का पालन किया।

ও ও ও

आठ महाद्वादशी

एक बार युधिष्ठिर महाराज ने श्री सूत गोस्वामी और शौनक ऋषि के संवाद में इस आठ महाद्वादशी का वर्णन सुना है । वह इस प्रकार है :

श्री सूत गोस्वामी ने कहा, ''विद्वान ब्राह्मणों ! उन्मीलिनी, व्यंजुली, त्रिस्पर्शा, पक्षवर्धिनी, जय, विजय, जयंती और पापनाशिनी यह आठ महाद्वादशी है। इसमें पहले चार तिथि के अनुसार और बाद के चार नक्षत्रों के अनुसार आते है। कुछ भी हो ये सभी महाद्वादशी पाप राशियों का नाश करते है ।

आठ महाद्वादशी इस प्रकार है :

१) द्वादशी के दिन भी एकादशी दिन आता हो या द्वादशी बढती न हो तो उसे उन्मीलिनी महाद्वादशी कहते है।

२) द्वादशी के दिन एकादशी न आती हो पर द्वादशी तिथि को बढकर त्रयोदशी आती है तो उसे व्यंजुली महाद्वादशी कहते है। इस व्रतसे अनेक पापराशियों का निर्मूलन होता है।

३) द्वादशी के सूर्योदय तक अगर एकादशी हो और त्रयोदशी के सूर्योदय तक द्वादशी हो तो उसे त्रिस्पर्शा महाद्वादशी कहते है। यह महाद्वादशी भगवान् श्रीहरि को बहुत ही प्रिय है। (अगर एकादशी दशमी दिन ही होगी तो वह महाद्वादशी नही होती.)

४) अमावस्या या पूनम के वक्त जो द्वादशी आती है उसे पक्षवर्धिनी महाद्वादशी कहते है। ऐसे समय में एकादशी दिन के बजाय द्वादशी को उपवास करना चाहिए।

उपर कहे हुए सभी महाद्वादशी तिथि के अनुसार आते है और नीचे कहे हुए महाद्वादशी नक्षत्रों के अनुसार आते है।

५) ब्रह्मपुराण में वसिष्ठ ऋषि और मदंत राजा के संवाद में बताया गया है कि द्वादशी तिथि को पुनर्वसु नक्षत्र हो तो और वह शुक्ल पक्ष की द्वादशी हो तो उसे जया महाद्वादशी कहते है। सभी महाद्वादशी में यह सबसे पवित्र मानी जातीहै ।

६) विष्णुधर्मोत्तर पुराणमें कहा गया है की, शुक्ल पक्ष की द्वादशी को श्रवण नक्षत्र है तो उसे विजया महाद्वादशी कहा गया है। वामनदेव इसी नक्षत्र में अवतरित हुए, इसीलिए ये नक्षत्र काफी महत्त्वपूर्ण है। अगर ये द्वादशी श्रावण मास के बुधवार दिन आती हो तो यह अवर्णनीय है। इस दिन विशेष करके वामनदेव की लीलाओंका श्रवण और कीर्तन करना चाहिए।

७) शुक्ल पक्ष की द्वादशी को अगर रोहिणी नक्षत्र हो तो उसे जयंती महाद्वादशी कहा जाता है। भगवान् श्रीकृष्ण रोहिणी नक्षत्र पर जन्मे थे इसीलिए ये महाद्वादशी बहुत ही

महान है। इस दिन विशेष करके भगवान् श्रीकृष्ण के जन्मलीला का श्रवण करना चाहिए।

८) शुक्ल पक्ष के द्वादशी को पुष्य नक्षत्र आता हो तो उस द्वादशी को पापनाशनी महाद्वादशी कहा जाता है। इस महाद्वादशी के पालन करनेसे १००० एकादशियों का फल मिलता है।

शास्त्रो में अगर बहुत फलप्राप्ति दी भी हो लेकिन बुद्धिमान भक्त को केवल भगवान् की अनन्य भक्ति प्राप्त करने की इच्छा से ही इस व्रत का पालन करना चाहिए।

जब भी महाद्वादशी आती हो तभी शुद्ध भक्तों को उसका मान रखना चाहिए। उस वक्त एकादशी न करते हुए महाद्वादशी का उपवास करना चाहिए।

☙ ☙ ☙

परिशिष्ठ

एकादशी को खाने के पदार्थ :

१) सभी प्रकारके फल, मूंगफली, मूंगफली का तेल.

२) आलू, नारियल, शक्कर, गुड, दूधसे बनाई वस्तुएँ ।

एकादशी को इस पदार्थों का खना वर्जित है :

१) टमाटर, बैंगन, फूलगोभी,

२) हरी पत्तेदर सब्जियाँ,

३) चावल, गेहूँ, ज्वार, दाल, मक्का इत्यादि,

४) बेकिंग सोडा, बेकिंग पावडर, कस्टर्ड,

५) दुकान के आलू वेफर्स, तली हुई मुँगफली इत्यादि,

६) शहद पूरी तरह से वर्जित

एकादशी को उपयोग के मसाले :

हल्दी, अदरक, सैंधा नमक, काली मिर्च इत्यादि।

ꕥ ꕥ ꕥ